(A)

प्रश्न- 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए ?

उत्तर- प्रतिपाद्य— सहर्ष स्वीकारा है कविता 'भूरी-भूरी खाक-धूल' काव्य संग्रह से ली गई है। यह कविता मुक्तिबोध की सशक्त रचना है। क्योंकि कवि ने अपने जीवन के समस्त खट्टे-मीठे अनुभवों, कोमल कठोर अनुभूति को तथा सुख-दुःख की स्थितियों को सहर्ष स्वीकारा है। वह अपने किसी भी क्षण को अपने प्रेरक से न केवल जुड़ा हुआ पाता है अपितु हर स्थिति-परिस्थिति को उसी की देन मानता है। उसका समस्त जीवन अपने प्रेरक की संवेदनाओं से जुड़ा हुआ है। उसके भीतर जो प्रेम का प्रवाह है वह उसके प्रेरक की देन है परंतु कवि का अतिहृदय अंधकारमय है इसलिए वह प्रेरक के प्रेम को निभा पाने में स्वयं को अक्षम मानता है। अतः वह उसका दंड भुगतना चाहता है। वह अंधेरी गुफाओं में निर्वासन का दंड चाहता है लेकिन उसे विश्वास है कि वहाँ भी उसे प्रेरक की यादों का सहारा मिलेगा चाहे दुःख हो या सुख हो हर स्थिति में वह स्वयं को अपने प्रेरक से जुड़ा हुआ पाता है।

शिल्प सौंदर्य पर आधारित

भाषा- खड़ी बोली, जिसमें कवि ने विशेषणों का सुंदर प्रयोग किया है।

छंद- मुक्त छंद

काल- आधुनिक काल (प्रगतिवादी)

शैली- संबोधन शैली

रस- करुण रस

अलंकार — सहर्ष-स्वीकारा, गरबीली-गरीबी, विचार-वैभव— अनुप्रास अलंकार

भर भर, पल पल - पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार।
जितना भी उड़ेलता हूँ भर-भर फिर आता है - विरोधाभास अलंकार

पानी का सोता, ममता के बादल, विचार - वैभव - रूपक अलंकार

जाता कि वहाँ भी तो तुम्हारा ही सहारा - विरोधाभास अलंकार

कविता के साथ -

1- टिप्पणी कीजिए -
गरबीली गरीबी - कवि ने गरीबी के साथ गरबीली विशेषण का प्रयोग इसलिए किया है क्योंकि गरीबी में भी वह स्वाभिमान के साथ जी रहा है और गरीबी से संघर्ष करते हुए उसे जीवन के वे अनुभव प्राप्त हुए है जो संपन्नता के समय प्राप्त नहीं हो सकते।

भीतर की सरिता - कवि के हृदय के अंदर स्मृति रूपी भावनाओं की नदी प्रवाहित होती रहती है। हृदय के इस अमूल्य भाव को ही कवि ने भीतर की सरिता कहा है।

बहलाती सहलाती आत्मीयता - कवि ने स्वयं को प्रेरक की ममता से आच्छादित पाया है, जो उसे बहलाती, प्रेमपूर्वक व्यवहार करती और सांत्वना देती है। उसका यह व्यवहार कवि के कष्टों को कम करता रहता है।

ममता के बादल - ममता का अर्थ है - अपनत्व या स्नेह। कवि के हृदय में प्रेरक की

ममता रूपी स्नेह का एहसास सदैव बना रहता है जैसे आसमान में बादल छाए रहते हैं, उसी प्रकार व प्रेरक से जुदा होकर भी हर पल कवि प्रेरक की ममता का एहसास करता रहता है।

2- इस कविता में और भी टिप्पणी-योग्य पद प्रयोग हैं। ऐसे किसी एक प्रयोग का अपनी ओर से उल्लेख कर उस पर टिप्पणी करें।

उत्तर- इस कविता में ऐसा एक पद है —

दिल में क्या झरना है
मीठे पानी का सोता है।

इसका अर्थ है जिस प्रकार झरने में चारों तरफ की पहाड़ियों से पानी स्खलित होता रहता है, उसी प्रकार कवि के हृदय में भी प्रेरक के प्रति स्नेह उमड़ता रहता है। कवि कहता है उनके हृदय में प्रेरक के प्रति अत्यधिक प्रेम है जो झरने के मीठे पानी के समान है और कभी न समाप्त होने वाला है।

3- व्याख्या कीजिए

जाने क्या रिश्ता है, जाने क्या नाता है
जितना भी उँडेलता हूँ, भर-भर फिर आता है
दिल में क्या झरना है?
मीठे पानी का सोता है
भीतर वह, ऊपर तुम
मुसकाता चाँद, ज्यों धरती पर रात-भर
मुझ पर त्यों तुम्हारा ही खिलता वह चेहरा है।

उपर्युक्त पंक्तियों की व्याख्या करते हुए यह बताइए कि यहाँ चाँद की तरह आत्मा पर झुका चेहरा भूलकर अंधकार- अमावस्या में नहाने की बात क्यों की गई है।